



सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल

प्रलिस के लयः

सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल, [ICAO](#), [UNCCC](#), [पेरसऱ समझौता](#), [शुद्ध-शून्य](#), [गरीनहाउस गैस उत्सर्जन](#), [CORSIA](#)

मेन्स के लयः

सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल, इसका महत्त्व और चुनौतयऱँ

चर्चा में क्यऱँ?

हाल ही में भारत ने वर्ष 2050 के लक्ष्य के साथ [सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल](#) (Sustainable Aviation Fuel- SAF) के लयऱ वैश्वकऱ जनादेश पर आपत्तऱ वयक्त की है और कहा है कऱ यह "बहुत जल्दी (Too Early)" है ।

- दक्षणऱ कोरयऱ में 41वीं अंतरराष्टरीय नागरकऱ उडडयन संगठन (ICAO) ने अंतरराष्टरीय वमऱनन के लयऱ [UNCCC पेरसऱ समझौते](#) के समर्थन में वर्ष 2050 तक शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जन के **दीर्घकालकऱ वैश्वकऱ आकांक्षात्मक लक्ष्य (Long-Term Global Aspirational Goal- LTAG)** को अपनाया ।

SAF जनादेश पर भारत का रुखः

- भारत का मानना है कऱ प्रत्येक देश को अपनी राष्ठीय यऱजनाओं के अनुसार **रणनीतऱ वकऱसतऱ करने की अनुमतऱ दी जानऱ** चाहयऱ ।
- भारत ने वमऱनन क्षेत्र में यात्रयऱँ की बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा करने जैसे अन्य प्राथमकऱताओं को संबोधतऱ करते हुए अपने कार्बन नेट-शून्य लक्ष्यऱँ को प्राप्त करने में ICAO से समर्थन मांगा है ।
- LTAG की वधऱरधारा के साथ संरेखतऱ करने के लयऱ वॉल्यूमेटरकऱ शासनादेश लागू करने से पहले SAF उत्पादन, प्रमाणन और उपलब्धता सुनश्चऱतऱ करना महत्त्वपूर्ण है ।**
 - भारत वर्ष 2027 से ICAO की [कार्बन ऑफसेटगऱ एंड रडऱकशन स्कीम फॉर इंटरनेशनल एवऱशन \(CORSIA\)](#) और LTAG में भाग लेने का इरादा रखता है ।

सस्टेनेबल एवऱशन फ्यूलः

- परचयः**
 - इसे **बायो-जेट फ्यूल** भी कहा जाता है, इसका उत्पादन राष्ठीय स्तर पर वकऱसतऱ तकनीकऱँ का उपयोग करके कयऱ जाता है जसऱमें खाना पकाने के तेल और उच्च तेल वाले पौधऱँ के बीजऱँ का इस्तेमाल कयऱ जाता है ।
 - ASTM इंटरनेशनल** द्वारा ASTM D4054 प्रमाणीकरण के लयऱ आवश्यक मानकऱँ को पूरा करने हेतु संस्थानऱँ द्वारा उत्पादतऱ इस ईंधन के नमूनों का संयुक्त राष्टर फेडरल एवऱशन एडमऱनऱसऱटरेशन क्लीयरगऱ हाउस में उच्च परीक्षण कयऱ जा रहा है ।
 - ASTM प्रमाणन एक ऐसी प्रक्रयऱ है जसऱके द्वारा कसऱी **उत्पाद या सामग्री का परीक्षण** तथा प्रासंगकऱ ASTM मानकऱँ के खलऱफ **मूल्यांकन कयऱ जाता है ।** ASTM इंटरनेशनल **उत्पादऱँ और प्रक्रयऱँ के लयऱ तकनीकी मानक** वकऱसतऱ करता है ।
 - ASTM मानकऱँ का उपयोग उद्यऱग, सरकारऱँ और अन्य संगठनऱँ द्वारा उत्पादऱँ तथा प्रक्रयऱँ में गुणवत्ता, सुरक्षा एवं वशऱवसनीयता सुनश्चऱतऱ करने के लयऱ कयऱ जाता है ।
- उत्पादन के स्रोतः**
 - वैजजानकऱ तथा औद्यऱगकऱ अनुसंधान परषऱद (CSIR) के भारतीय पेट्रोलयऱम संस्थान (IIP) ने गैर-खाद्य और [खाद्य तेलऱँ](#) के साथ-साथ कृकगऱ ऑयल जैसे **वभऱनऱन सामगऱयऱँ का उपयोग करके ईंधन बनाया है ।****
 - उन्हऱँने इसके लयऱ पाम **स्टीयरऱनऱ, सैपयऱम ऑयल, पाम फैटी एसडऱ डऱसऱटलऱट्स, शैवाल तेल, करंजा और जेट्रोफा** सहतऱ वभऱनऱन स्रोतऱँ का उपयोग कयऱ ।

- भारत में SAF स्केलिंग का महत्त्व:
 - भारत में SAF के उत्पादन और उपयोग को बढ़ाने से [ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने](#), वायु गुणवत्ता में सुधार, ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि, नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में रोजगार सृजित करने और [सतत विकास को बढ़ावा देने सहित कई लाभ मिल सकते हैं](#)।
 - यह [वमिनन उद्योग](#) को अपने पर्यावरणीय लक्ष्यों को पूरा करने और जलवायु परिवर्तन की समस्या के समाधान हेतु किये जा रहे वैश्विक प्रयासों में मदद कर सकता है।
 - [वमिनन के लिये जैव ईंधन](#) को सामान्य जेट ईंधन के साथ मिलाकर उपयोग किया जा सकता है। पारंपरिक ईंधन की तुलना में इसमें [सल्फर की मात्रा कम](#) होती है जो वायु प्रदूषण को कम करके भारत के [शुद्ध शून्य उत्सर्जन लक्ष्य](#) को प्राप्त करने में सहायता कर सकता है।

SAF संबंधी चुनौतियाँ:

- उच्च लागत:
 - SAF के लिये उत्पादन प्रक्रियाएँ (जैसे बायोमास या अपशषिट तेलों को ईंधन में बदलना) **वर्तमान में अधिक महँगी हैं**। इस लागत अंतर से [एयरलाइंस के लिये SAF उत्पादन में निवेश करना](#) और विशेष रूप से वमिनन उद्योग की लाभांश-संवेदनशील प्रकृति को देखते हुए उपयोग करना आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- सीमिति संसाधन उपलब्धता:
 - SAF की पर्याप्त और विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु वमिनन उद्योग को एक [सुदृढ़ आपूर्ति शृंखला की आवश्यकता](#) है। हालाँकि भौजुदा बुनियादी ढाँचा अच्छी तरह से विकसित नहीं है, जो SAF उत्पादन को बढ़ाने और बाज़ार में इसकी उपलब्धता में बाधा डालता है।
- फीडस्टॉक की उपलब्धता:
 - SAF का उत्पादन [स्थायी फीडस्टॉक्स की उपलब्धता पर निर्भर करता है](#), जैसे कि कृषि अवशेष, शैवाल और अपशषिट तेल इत्यादि।
 - हालाँकि इन [फीडस्टॉक्स की सीमिति उपलब्धता](#) है तथा खाद्य एवं कृषि जैसे अन्य उद्योगों के साथ [संसाधनों को लेकर प्रतिसिपर्द्धा](#) है। खाद्य सुरक्षा और अन्य आवश्यक ज़रूरतों को सुनिश्चित करते हुए [स्थायी फीडस्टॉक्स की मांग को संतुलित बनाए रखना एक महत्त्वपूर्ण चुनौती](#) है।
- प्रमाणन प्रक्रिया:
 - SAF के संबंध में [सख्त गुणवत्ता और स्थायी मानदंड](#) हैं जो प्रमाणन प्रक्रिया को अधिक जटिल और दीर्घकालिक बना सकते हैं।
 - [वशिव स्तर पर मान्यता प्राप्त मानकों की कमी](#) प्रमाणन प्रक्रिया को और जटिल बनाती है।

भारत की जलवायु प्रतबिद्धताएँ और वैश्विक प्रयास:

- भारत की नेट-ज़ीरो/शुद्ध-शून्य प्रतबिद्धता:
 - भारत ने **वर्ष 2070 तक नेट-ज़ीरो उत्सर्जन** हासिल करने और **वर्ष 2030 तक अर्थव्यवस्था में कार्बन तीव्रता को 45% से कम करने का संकल्प** लिया है।
 - इसके अतिरिक्त भारत ने विकसित देशों से जल्द-से-जल्द **1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का जलवायु वित्त प्रदान करने का आग्रह** किया है क्योंकि इन महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये भारत को विकसित देशों के समर्थन और संसाधनों की आवश्यकता है।
 - अप्रैल 2023 में यूरोपीय संघ यूरोप में एयरलाइनों के लिये बाध्यकारी लक्ष्य निर्धारित करने हेतु एक समझौते पर पहुँचा है जिसमें SAF के उपयोग को बढ़ाने की आवश्यकता थी।
 - यह समझौता अनिवार्य है क्योंकि यूरोपीय संघ के हवाई अड्डों पर **वर्ष 2025 तक ईंधन की आपूर्ति का 2% SAF** होगा जो वर्ष 2030 में 6%, वर्ष 2035 में 20% और वर्ष 2050 में 70% तक पहुँच जाएगा।
- भारतीय पहल:
 - [बायोडीज़ल](#)
 - [पारंपरिक ईंधन में इथेनॉल सममिश्रण](#)
 - [हाइड्रोजन फ्यूल सेल](#)
- वैश्विक प्रयास:
 - [कार्बन ऑफसेटिंग एंड रडिकेशन स्कीम फॉर इंटरनेशनल एविएशन \(CORSA\)](#)
 - [इंटरनेशनल डे ऑफ क्लीन एयर](#)
 - सस्टेनेबल स्काइज़ एक्ट और SAF उत्पादन प्रोत्साहन

अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन:

- ICAO संयुक्त राष्ट्र (UN) की एक **वशिव एजेंसी** है, जिसने वर्ष 1944 में स्थापित किया गया था, जिसने शांतिपूर्ण वैश्विक हवाई नौवहन के लिये मानकों और प्रक्रियाओं की नींव रखी।
 - अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन के कन्वेंशन पर 7 दिसंबर, 1944 को शिकागो में आमतौर पर **'शिकागो कन्वेंशन'** के रूप में हस्ताक्षर किये गए थे।
 - इसने हवाई मार्ग से अंतरराष्ट्रीय परविहन की अनुमति देने वाले मूल संधिधार्तों की स्थापना की, और ICAO के निर्माण का भी नेतृत्व किया।
- इसका एक उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय हवाई परविहन की योजना और विकास को बढ़ावा देना है ताकि वैश्विक स्तर पर अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन के सुरक्षित एवं व्यवस्थित विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

- भारत इसके 193 सदस्यों में शामिल है।
- इसका मुख्यालय मॉन्ट्रियल, कनाडा में है।

आगे की राह

- वैश्विक SAF जनादेश पर भारत का रुख जलवायु परिवर्तन से निपटने की अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, साथ ही इसकी राष्ट्रीय योजनाओं और विशेष परिस्थितियों पर भी विचार करता है।
- भारत विमानन क्षेत्र में अन्य प्राथमिकताओं के साथ स्थिरता लक्ष्यों को संतुलित करने में ICAO से समर्थन चाहता है। जैसे-जैसे विश्व विमानन को कार्बन मुक्त करने की दशा में आगे बढ़ रहा है, हवाई यात्रा के लिये एक स्थायी भविष्य प्राप्त करने हेतु साझा आधार तलाशना और साथ मिलकर काम करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है।
- एयरलाइंस, ईंधन उत्पादकों और अनुसंधान संस्थानों सहित हतिधारकों के बीच सहयोग से अधिकिकीकृत एवं कुशल SAF आपूर्ति शृंखला बनाने में मदद मिल सकती है।
- SAF उत्पादन के लिये नए फीडस्टॉक स्रोत विकसित करने हेतु अनुसंधान में निवेश, जैसे- नगरपालिका ठोस अपशिष्ट एवं कृषि अपशिष्ट, फीडस्टॉक उपलब्धता बढ़ाने और अन्य उद्योगों के साथ प्रतिस्पर्धा को कम करने में मदद कर सकता है।

स्रोत: द द्रिष्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/sustainable-aviation-fuel-1>

